हिन्दी

(स्पर्श) (पाठ 9)(रैदास– पद)
(कक्षा 9)

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1 :
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
(क).
पहले पद में भगवान और भक्त की जिन–जिन चीजों से तुलना की गई है , उनका उल्लेख कीजिए।
उत्तर क:
पहले पद में भगवान की तुलना चंदन , बादल , दीपक , मोती तथा स्वामी से की गई है और भक्त की तुलना पानी ,चकोर ,बाती , धागा और दास से की गई है

(ख).
पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद सौंदर्य आ गया है , जैसे पानी , समानी आदि इस पद के अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखिए।
उत्तर ख :
अन्य तुकांत शब्द निम्न प्रकार हैं ।
मोरा–चकोरा , बाती–राती , धागा–सुहागा , दासा–रैदासा

(ग).
पहले पद में कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबद्ध हैं । ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए।
उत्तर ग :

उदाहरण :	**दीपक**	**बाती**
	मोती	धागा
	घन	मोर
	चंद	चकोर
	स्वामी	दास

(घ).
दूसरे पद में कवि ने ' गरीब निवाजु ' किसे कहा है ? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर घ :
दूसरे पद में कवि ने ' गरीब निवाजु ' अपने आराध्य ईश्वर को कहा है , जो दीन दुखियों पर दया करने वाला है और उसके मस्तक पर मुकुट सुन्दर लग रहा है ।

(ङ).
दूसरे पद की ' जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर ङ :
कवि का कहना है कि जिन लोगों को समाज अछूत मानता है , जिसके छूने मात्र से ही लोग अपवित्र हो जाते हैं और कुलीन लोग भी उन पर दया नहीं करते । जो समाज के द्वारा उपेक्षित हैं दया के पात्र हैं । हे ईश्वर आप उन पर दया करने वाले हो उनका उद्धार करने वाले हो।

(च).
रैदास जी ने अपने स्वामी को किन–किन नामों से पुकारा है ?
उत्तर च :
रैदास जी ने अपने स्वामी को लाल ,गुसाईं ,गोविंद , तथा हरिजी आदि नामों से पुकारा है ।

(छ).
निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए ।
मोरा , चंद , बाती ,जोति ,बरै , राती , छत्रु ,धरै , छोति , तुही , गुसईआ
उत्तर छ :
शब्दों के प्रचलित रूप :–

शब्द	**प्रचलित रूप**
मोरा	मोर , मयूर
बाती	बत्ती
चंद	चंद्र , चंद्रमा
जोति	ज्योति
बरै	जलती है
छत्रु	छत्र
छोति	छूत , छूना
गुसइयाँ	गुसांई , गोसाईं
राती	रात्रि , रात
धरै	धारण करता है
तुहीं	तुम्ही

प्रश्न 2 :
नीच लिखी पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए –
(क).
जाकी अंग–अंग बास समानी
उत्तर क :
जिस प्रकार चंदन का लेप लगाने पर सारे अंग सुगंधित हो जाते हैं ठीक उसी प्रकार ईश्वर की भक्ति पूरे शरीर में समाकर शरीर और मन दोनों को ही पवित्र कर देती हैं ।

(ख).

जैसे चितवत चंद चकोरा

उत्तर ख :

जिस प्रकार चकोर पक्षी रात भर चंद्रमा की ओर टकटकी लगाए देखता रहता है और सुबह होने की प्रतीक्षा करता है । ठीक उसी प्रकार भक्त एकटक ईश्वर की भक्ति में लीन रहता है ताकि उसकी कृपा को पा सके

(ग).

जाकी जोति बरे दिन राती

उत्तर ग :

कवि प्रभु के प्रति अपनी भक्ति को दीए और बाती की तरह देखता है उसका कहना है कि जिस प्रकार दिए की बाती जलकर प्रकाशित करती है ठीक उसी प्रकार आपकी भक्ति रूपी दिया दिन–रात जलकर मुझे अंदर से प्रकाशित करता रहता है ।

(घ).

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै

उत्तर घ :

कवि प्रभु को का आभार प्रकट करते हुए कह रहा है कि आप ही हैं जो इतनी उदारता दिखा सकते हैं । आप निडर होकर सभी का कल्याण करने वाले हैं ।

(ड).

नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै

उत्तर ड :

कवि का कहना है कि मेरे प्रभु समाज में नीच समझे जाने वाले लोगों को ऊँचा करने वाले अर्थात् समाज में सम्मान दिलाने वाले हैं और ऐसा करते समय वह किसी से भी नहीं डरने वाले हैं।

प्रश्न 3 :

रैदास के इन पदों का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए ।

उत्तर 3 :

1. रैदास जी ने पहले पद में कुछ उदाहरण देते हुए ईश्वर और भक्त को एक दूसरे का पूरक बताया है जैसे :– चंदन और पानी , दीया और बाती , बादल और मोर एक दूसरे के संपर्क में आने पर प्रभावित होते हैं वैसे ही भक्त और ईश्वर एक दूसरे के संपर्क में आने पर ही आनंदित होते हैं।

2. रैदास जी ने दूसरे पद में भगवान का धन्यवाद करते हुए कहा है कि आप ही संसार में सबका कल्याण करने वाले तथा समाज में निम्न समझे जाने लोगों का उद्धार करने वाले हो।

भाव स्पष्ट कीजिए:

1:
बिरह भुवगंम तन बसै , मंत्र न लागै कोइ ।
उत्तर 1:
कबीरदास जी ने विरह के महत्व को समझाते हुए कहा है कि जब विरह रूपी सर्प शरीर में अपना वास कर लेता है तो कोई भी मंत्र काम नहीं करता है क्योंकि विरह की इसी सर्वोच्च दशा के बाद ही ईश्वर के प्रेम की प्राप्ति हाती है।

2:
कस्तूरी कुंडलि बसै , मृग ढ़ूँढ़े बन माँहि ।
उत्तर 2:
कबीरदास जी कहते हैं कि जिस प्रकार हिरण की नाभि में कस्तूरी होने पर भी वह उसकी सुगंध को पाने के लिए पूरे जंगल में भटकता फिरता है । वैसे ही मनुष्य भी ईश्वर के ज्ञान के अभाव में उसे ढ़ूंढ़ता फिरता है।

3:
जब मैं था तब हरि नहीं , अब हरि है मैं नाहिं ।
उत्तर 3:
कबीरदास जी कहते हैं कि जब तक मेरे अंदर मैं का भाव 'अहंकार ' था तब तक मुझे हरि की प्राप्ति नहीं हुई थी । अब मेरे अंदर से अहंकार समाप्त हो गया है और मुझ पर ईश्वर की कृपा हो गई है ।

4:
पोथी पढ़ि पढ़ि जब मुवा , पंडित भया न कोइ ।
उत्तर 4:
कबीरदास जी कहते हैं कि बड़े बड़े ग्रंथ पढ़कर लोग अपने को ज्ञानी समझने लगते हैं लेकिन ईश्वर के प्रति यदि प्रेम और भक्ति का भाव नहीं जागा तो वह पूर्ण ज्ञानी नहीं बन सका अर्थात अज्ञानी ही रहा ।